International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in March 2024, ISSN -2393-8048

गोस्वामी तुलसीदास और रामचरितमानस

किरण, शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर
डॉ0 मोनिका व्यास, सहायक आचार्य हिन्दी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

परिचयात्मक शोध की भूमिका

तुलसीदास का रामचरितमानस भारत की समस्त जनता का हृदय हार है। पूरे भारतवर्ष में आम जनता से लेकर प्रबुद्धवर्ग तक रामचरित मानस को श्रद्धा व आदर प्राप्त है। करोड़ो लोग मानस की स्तुति एवं पाठ करने के पश्चात् अन्न जल ग्रहण करते है। तुलसीदास ने स्वयं माना है कि श्री रामचरितमानस का स्थान हिन्दी साहित्य में ही नहीं जगत के साहित्य में निराला है। रामचरितमानस तुलसीदास का एक अप्रतिम काव्य हैं। यह सरसता, प्रभावोत्पादकता, गंभीरता एवं भावप्रेषणीयता की दृष्टि से, सुव्यस्थित कथा योजना की दृष्टि से, राम में भक्ति शील एवं सौन्दर्य की प्रतिष्ठा की दृष्टि से तथा उत्कृष्ट शील निरूपन एवं काव्य सौष्ठता की दृष्टि से यह एक अतुलनीय काव्य है। डा. भगवानशरण भारद्वाज के अनुसार "रामचरितमानस भारत की चिरन्तन संस्कृति का निर्मल दर्पण है, और भारतीय जनता के स्वप्नों और आकांक्षाओं का ज्वलन्त दस्तावेज है।"

''भक्ति कालीन रामकाव्य का साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रभाव में तुलसीदास की भूमिका और लोकभाषा के माध्यम से धार्मिक पुनर्जागरण की चर्चा की गई है।''

रामचरितमानस तुलसी का एक कीर्ति स्मारक ग्रन्थ है इस महाकाव्य से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि पिता–पुत्रा, भाई–भाई, पति–पत्नी तथा राजा–प्रजा के सम्बन्ध किस प्रकार के होने चाहिए, कैसे एक मर्यादावादी व आदर्शवादी समाज की स्थापना की जा सकती है। रामचरितमानस का अन्वेक्षण करने के उपरांत लगता है कि किस प्रकार राम लक्ष्मण का स्नेह, पिता दशरथ की कार्य कर्मठता व संवेदनशीलता तथा पत्नी सीता की त्याग भावना हमारी अन्तः चेतना को झंकृत करती है। ऐसे मर्यादा, शिष्टता, नम्रता, सरसता, आत्मीयता, गम्भीरता, सरलता व भावप्रेषणीयता के अनेक उदाहरण मानस में सुलभ है।

तुलसी ने रामचरितमानस की रचना विशेष उद्देश्य से प्रेरित होकर की है। जहाँ एक और तुलसी ने **'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा, भाषा निबन्धमतिमंजुलमात नोति'** कहकर आत्मसंतोष व आत्मतृप्ति हेतु इसकी रचना की है वहीं दूसरी और कीर्ति **भणिति भूति भल सोई, सुरसरि सम सब कर हित होई** कहकर काव्य की श्रेष्ठता व उच्चता तथा सभी के कल्याण हेतु इस कृति की सृजना की हैं।

रचि महेस निज मानस राखा। पाई सुसमय सिवा मनभाषा।।
ताते राम चरितमानस वर। धरेउ नाम हिंय हेरि हरसि हर।।

तुलसीदास जी कहते है कि रामचरितमानस की रचना भगवान शिव ने अपने मानस में करके रख छोड़ी थी। उसे सुसमय देख कर शिव जी ने उतारी है। तुलसी के राम यशस्वी प्रजाहितैषी, लोकप्रिय, मेधावी, बलिष्ठ, महात्यागी, सौन्दर्य सम्पन्न, प्रजापालक, धैर्यवान एवं उच्चतम आदर्श के प्रतीक है। इन्होंने मानस में आदर्श धर्म एवं आदर्श समाज की प्रतिष्ठा की है जहाँ लोकहित एवं लोककल्याण हेतु एक प्रतिष्ठित वातावरण निर्मित किया जाता है। ''राम काव्य में धर्म और आस्था के साथ–साथ सामाजिक एकता और सदाचार की भावना को प्रोत्साहित किया है।''

रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल प्रतीक है। हमारी सांस्कृतिक उपलब्धियों व सामाजिक नीति आदर्शो का पिष्टपेषण व विश्लेषण मानस में सहजता व विनम्रता से हुआ हैं। समस्त घटनाओं, प्रघटनाओं का विवरण श्रृंखलाबद्ध है जो मानव हृदय को स्पर्श कराने वाली तथा उसे अनेक भावों का रसात्मक अनुभव कराने वाली है। रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार "संसार की भयानक विपत्तियाँ सहकर कवि तुलसीदास ने हमे अमूल्य पदार्थ रामचरितमानस के रूप में दान किया है। उसकी तुलना संसार के किसी दान से नहीं की जा सकती। रामचरितमानस एक कल्याणकारी ग्रन्थ है। वह एक सांचा है, जिसमें जीवन को ढालकर उससे एक सुन्दर स्वरूप प्राप्त किया जा सकता है।

तुलसी के मानस की रचना नानापुराण निगमागम के आधार पर हुई है। परन्तु गोस्वमी ने अध्यात्मरामायण, वाल्मीकि रामायण, भुसंडिरामायण, हनुमन्नाटक तथा प्रसन्नराघव को अधिक महत्व देकर अधिकांश प्रसंगों का चयन उक्त ग्रन्थों के आधार पर ही किया गया हैं। अतएव मानस में भारतीय संस्कृति के दिव्य भावों को मूर्त व साकार रूप प्रदान किया गया हैं। इससे हमारे सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिदृश्य को एक ऐसी प्राणवायु मिल रही है जो जीवनवर्धन संस्कृतिवर्धन व संस्कारवर्धन में हितकारी है।

परिचयात्मक शोध के सोपान

तुलसीदास के भगवान, आराध्य देव, सहयोगी, मित्र व भ्राता श्रीराम थे। श्रीराम के प्रति उनमें एक अनन्य समर्पण भावना विद्यमान थी। उनकी भक्ति में विश्वास श्रद्धा धैर्य का एक निगूढ़ समन्वय मिलता है। यही दैन्य भावना व उनका शान्त व्यवहार उनकी भक्ति भावना की एक प्राणशक्ति है उनके लिए राम ही सर्वोपरि है। सम्पूर्ण सृष्टि व प्राणी जगत राम के ही पर्याय है–

राम सो बड़ो है कौन, मो सो कौन छोटो।
राम सौ खरो है कौन, मो सो कौन खोटो।।

मानस तुलसीदास की लोकोपकारक प्रबन्धात्मक कृति है इन्होनें मानस का बौद्धिक स्तर बहुत ऊँचा रखा है और ज्ञान वैराग्य भक्ति आदि का विवेचन विविध स्थलों पर विविध प्रकार से किया है। रामचरितमानस की भूमि सत् के समर्थन और असत् के समुच्य और सघंर्ष का ही दूसरा नाम है, अर्थात् तुलसी ने अपने आराध्य का वर्णन निष्ठा तथा नियमपूर्वक किया है तथा राम का प्रशस्तिगान स्वयं तो किया है, बड़े देवताओं, मुनियों और भक्तों से भी यथास्थान करवाया है। तुलसी के काव्य में रामकथा के साथ–साथ हमारे सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की संजीव झाँकी अंकित हुई है। ''तुलसीदास का रामचरित मानस भक्ति कलीन राम काव्य का सर्वोत्तम उदाहरण है जिसमें हिन्दी भाषा, संस्कृति, नीति और धर्म का अद्भुत समन्वय हुआ है।''

जनसाधरण में व्याप्त रीति–रिवाज, संस्कार, मूल्य तथा जनविश्वास आदि का चित्रण भी बड़ी सजीवता व मार्मिकता के साथ चित्रित कर समस्त जनमानस की जनभावनाओं को भी आलोकित किया हैं। इसमें न केवल भारतीय सांस्कृतिक गरिमा को जनमानस तक पहुँचाया बल्कि भारतीय साहित्य इतिहास और समाज को नया मोड़ दिया तथा यथार्थ जीवन को गतिशीलता, रसात्मकता शक्ति व स्फूर्ति प्रदान की। तुलसी मनुष्य को अपने पराक्रम, तेज एवं कौशल से परिचित करवाना चाहते थे क्योंकि वे मानते थे कि मानव अपनी तपश्चर्या की अग्नि में तप कर सोना बन सकता है और अपने कौशल और चरित्र बल से समाज को नये आयाम प्रदान कर सकता है। इन्हीं भावों की विशद अभिव्यंजना उनकी रचनाओं में समग्रतः से हुई है।

परिचयात्मक शोध का महत्व

तुलसीदास हिन्दी साहित्य की एक ऐसी उपज है जिसने अपने काव्य में अपनी अद्भुत रचना चातुरी, विलक्षण उद्भावना शक्ति, निष्काम भक्ति उर्वर कल्पना एंव उत्कृष्ट काव्य का निर्माण किया है। इनके साहित्य की तुलना में कोई पूर्ववर्ती एंव परवर्ती काव्य नहीं ठहरता है। क्योंकि तुलसी अपने युग के एक ऐसे मनीषी पुरूष थे जिन्होनें अपने आलोक, तीव्र व तीक्ष्ण प्रतिभा से समाज के सर्वांग विकास व मूलभूत परिवर्तन हेतु अपनी बुद्धि एवं विवेक का परिचय दिया है। अन्तर्मन को पवित्रता प्रदान कराने वाला तुलसी का साहित्य शान्ति और क्रान्ति दोनों में ही समान रूपेण प्रेरणादायक सिद्ध हुआ है। डा. राजकुमार पाण्डेय का मानना है कि "महाकाव्यात्मक उद्देश्य की परिधि में गोस्वामी जी ने साम्प्रदायिक सीमाओं का अतिक्रमण कर अपने लक्ष्य को राष्ट्रहित व विश्व कल्याण की सीमाओं के निकट ला दिया है।"

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

1. जनसाधरण में व्याप्त रीति–रिवाज, संस्कार, मूल्य तथा जनविश्वास आदि का चित्रण प्रस्तुत करना।
2. भारतीय सांस्कृतिक गरिमा को जनमानस तक पहुँचाना।
3. राम काव्य में धर्म और आस्था के साथ–साथ सामाजिक एकता और सदाचार की भावना को प्रोत्साहित करना।
4. तुलसीदास की लोक व शास्त्र दोनों में गहरी पैठ है तथा जीवन व जगत की व्यापक अनुभूति और मार्मिक प्रसंगों को समझाने की चेष्टा करना।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह तथ्य ध्यातव्य प्रतीत होता है कि तुलसी भारतीय संस्कृति के एक महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं और रहेंगें भी। इन्होनें समाज संस्कृति व आवश्यकता अनुरूप एक ऐसे सत्साहित्य की सृष्टि की जो सम्पूर्ण भारत का मार्ग प्रदर्शक और भारतीय मूल्यों की सफल अभिव्यक्ति में दर्शक भी रहा है। विश्व के किसी भी देश में तुलसी की समानता का शायद ही कोई व्यक्तित्व होगा जिसकी रचना शताब्दियों तक उस देश के निवासियों को अनुप्राणित करती रही हो। तुलसी द्वारा स्थापित लोकधर्म अभी भी हिन्दुओं का सर्वमान्य लोकधर्म माना जाता है तथा उनका मानस हिन्दुओं का सर्वाधिक लोकप्रिय धर्मग्रन्थ है। लोकोपकारी, लोकापदेशक व लोकहितकारी रामचरितमानस की प्रासंगिकता आज भी है ऐसे सत्साहित्य के प्रणेता तुलसी तथा उनका रत्नग्रन्थ मानस तथा उनके इष्ट देवराम का यश हम सब का मार्गदर्शन करने के लिए युग–युग तक अजर–अमर रहेगा। अतः यह सच्चाई है कि भारतीय संस्कृति के अमर वैतालिक, भारतीय जीवन, जगत, जीवन्त मूल्यों, दर्शन, कला संस्कृति व मनोविज्ञान के नियामक युग पुरूष, युग चिन्तक, युग ऋषि, समाज सुधारक, लोकहित कारक, ब्रह्मर्षि तुलसीदास की विशिष्ट अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति अद्वितीय हैं। गम्भीर व सूक्ष्म परिशीलनांपरान्त यह प्रतीत होता है कि तुलसी चिन्तन भारतीय मानस की श्रीवृद्धि एवं श्रीसुधर के निमित्त एक आधारशिला है, विकास परिष्कार हेतु एक उपक्रम है। यहाँ सम्पूर्ण जनसृष्टि एवं भवसृष्टि हेतु अनेक नये आयाम है, अनेक सन्दर्भ है जिनके संसर्ग से मानव की मानवीयता का अर्थात् भारत की सम्पूर्ण भारतीयता का पल्लवन एवं विकास सम्भव है। अतः तुलसीदास और उनका समस्त चिन्तन व्यष्टि–समष्टि के परिप्रेक्ष्य में आदरणीय है, अनुकरणीय व अनुसरणीय है। आज के इस भटकावपूर्ण युग में भी निश्चत ही तुलसी का मानस मानवता को अपूर्व सम्बल प्रदान कर मुक्ति मार्ग दिखाने की अद्भुत क्षमता रखता है। निस्सन्देह तुलसी का रामचरितमानस हर मानस को नयी स्फूर्ति, नव ऊर्जा शक्ति संवदेनागत दीप्ति तथा आत्मिक व विचार शक्ति की प्रभावशीलता को दीप्त कर सुसंस्कृत व सुव्यवस्थित समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और भविष्य में भी यह सत्कार्य करता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कामिल बुल्केः रामकथा उत्पत्ति का विकास, हिन्दी परिषद्, प्रयाग विश्वविद्यालय
2. डा. अशोक तिवारी, हिन्दी प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, आगराः साहित्य भवन
3. डा. अशोक तिवारी, हिन्दी प्रतियोगिता सीरिज यू. जी. सी. आगराःसाहित्य भवन
4. डा. विनोद कालरा, सम्पादक उन्मीलन (शोध और सृजन) पंजाबः जालन्धर
5. डा. भगवान शरण भारद्वाज रामचरितमानस और आधुनिक जीवन की समस्याएँ, दिल्ली
6. डा. राजकुमार पाण्डेय, गोस्वामी तुलसीदास प्रबन्धकार एवं प्रगीतकार, दिल्ली
7. डा. भागीरथ मिश्र तुलसी रसायन
8. डा. माता प्रसाद गुप्तः तुलसीदास
9. डा. बलदेव प्रसाद मिश्र रामराज्य
10. डा. ऋषीकेश शुक्ल, आनन्द हिन्दी साहित्य का सम्पूर्ण अध्ययन, आनन्द पुस्तक मंदिर, शिक्षा साहित्य
11. डा. राजेश्वर प्रसाद चतुवेदी, गोस्वामी तुलसीदास, विनय पत्रिका, हरीश प्रकाशन मंदिर, आगरा